अहोई अष्टमी पर विशेष

राधाकुण्ड में संतान प्राप्ति के लिये प्रचलित स्नान पर्व आज रात्रि 12 बजे से

गोवर्धन (मथुरा), 22 अक्टूबर। गिरि गोवर्धन परिक्रमा मार्ग में स्थित राधाकुण्ड में संतान प्राप्ति के लिए आस्था तथा विश्वास के लिये प्रचलित परम्परागत स्नान पर्व कल 23 अक्टूबर को (आज) मध्य रात्रि 12 बजे होगा।

सन्तान प्राप्ति के लिये संस्कृति तथा पुराणों में प्रचलित राधाकुण्ड में अहोई अष्टमी को रात्रि अनूठे मेला में हजारों की संख्या में दम्पत्ति राधा तथा कृष्ण कुण्ड में स्नान के लिये आयेंगे, जहां रात्रि से आरम्भ स्नान पर्व भोर तक चलेगा

योगीराज श्री कृष्ण की जन्मभूमि होने के कारण बृजमण्डल मथुरा का विश्व में एक अलग ही स्थान है इसी भूमि से प्रिया-प्रियतम ने अपनी अद्‌भुत लीलाओं के द्वारा जगत के प्रेम कर्म और सत्यमार्ग पर चलने का संदेश दिया। इसी सत्यभूमि बृजमण्डल के नाम से जाना जाता है बृजमण्डल अपनी प्रेममयी भाषा रहन सहन और बृज संस्कृति के लिये सम्पूर्ण भारतवर्ष के श्रद्धालुओं में विशिष्ट स्थान रखता है।

इसी बृजमण्डल में जनपद मुख्यालय मथुरा से 28 किलोमीटर दूर स्थित भगवान कृष्ण की शक्ति राधाकुण्ड के नाम से जाना जाता है बृजमण्डल की हृदय स्थली में बसे इस पुण्यतीर्थ को बृजमण्डल का मुकट मणि होने का भी गौरव प्राप्त है।

भगवान श्री कृष्ण और राधिका की क्रीड़ास्थली श्रीधाम राधाकुण्ड के अलौकिक सौन्दर्य माधुर्य की छटा चर्मचक्षुओं से ही द्रष्टिगोचर होती है प्राकृत द्रष्टि से सम्पन्न इस पावन धाम की चिन्तामणि भूमि में जहां तहाँ आपको शक्त जनभाव शक्ति में विभोर मिलेंगें तो वहीं पक्षियों का कलरव और मयूर नृत्य भी आपकी आत्मा के तारों को झंकृत कर देगा। लता पताओं और कुंजों में कोकिल-काकली कूँजती मिलेंगी तो कहीं भ्रमर झंकृत सरोज सुरभित हुए मिलेगें। ऐसा नयनाभिराम दृश्य श्री धाम राधाकुण्ड में देखकर भक्तों का मन स्वत: ही कृष्णमयी हो जाता है।

श्यामा श्याम की इस भूमि में आकर भक्तों को आनन्द ही आनन्द प्राप्त होता है। उससे भाव-विभोर होकर भक्त इस पावन भूमि को भक्ति धारा मग्न हो जाता है। इस धाम में गोविन्द मंदिर, राधाकृष्ण मंदिर, गिरीज मुखार विन्द, अहोई देवी मंदिर प्रमुख हैं।

इस भूमि के बारे में तभी तो प्रचारित है:-

ब्रज चौरासी कोस में, है राधाकुण्ड धाम।

विहरत श्यामा-श्याम, यहां प्रतिदिन आठो याम॥

राधाकुण्ड धाम की महिमा के बारे में श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा है-

महारानी श्री राधिका, अष्ट सखिन के झुण्ड।

डगर बुधरत सांवरो जय-जय राधाकुण्ड॥

इस पुण्यतीर्थ का उल्लेख श्रीमद्‌ भागवत पुराण और चैतन्य चरितामृत जैसे धर्मशास्त्रों में बखूबी मिलता है।

राधाकुण्ड कस्बे के मध्य स्थित परिक्रमा मार्ग में तीर्थ शिरोमणि श्री राधाकुण्ड एवं कृष्ण कुण्ड नाम के दो अति प्राचीन सर्व पापहरी कुण्ड बने हुए हैं। इन कुण्डों में स्नान करने से ही ब्रह्म हत्या, गौ हत्या और कुष्ठ रोगों से प्राणी छूट जाता है। प्राचीन ग्रन्थों के अनुसार इन सर्वतीर्थ मम पुण्य कुण्डों में से कृष्ण कुण्ड को भगवान कृष्ण ने व राधाकुण्ड को श्री राधा ने उत्पन्न किया था। इन दोनों कुण्डों पर अहोई अष्टमी पर स्नान करने का विशेष महत्व है।

किदवन्तियों के अनुसार इन कुण्डों के प्रागट्य के बारे में बताया जाता है कि पहले इस ग्राम का नाम अरिष्ट खेरा था, जहां राजा कंस का सेवक अरिष्ट सुर नाम का दैत्य निवास करता था, यहां नित्य प्रति भगवान श्री कृष्ण, राधारानी बलदाऊ एवं गोप ग्वालों के साथ नन्द बाबा की गाय चराने इस सघन वन में आते थे। प्राचीन काल में भगवान गोप ग्वाल एवं राधारानी के साथ नित्य रासलीला करते थे तथा मग्न हो जाते थे।

एक दिन राजा कंस के आदेशानुसार अरिष्टसुर नामक दैत्य एक वृष (सांड) का रूप धारण कर गायों के झुण्ड में प्रेमविहार करते हुए कन्हैया की ओर मारने की मंशा से बढ़ने लगा। भगवान कृष्ण ने अपनी दिव्य दृष्टि से कृष्णरूप धारी अरिष्टसुर को पहचान लिया और उसे अपनी ओर रिझाते हुए गऊओं के झुण्ड से अलग ले जाकर पूंछ पकड़कर जमीं पर रखें एक विशाल शिलाखण्ड से दे मारा जिससे दैत्य मारा गया और वह उसी दिव्य शक्ति में समां गया। यह स्थान आज भी यहां मौजूद है।

तत्पश्चात श्री कृष्ण गोप ग्वाल राधारानी की ओर उन्मुख हुए। जिसे देखकर श्री राधारानी ने कहा कि हे कृष्ण! आपने एक वृष (सांड) का वध किया है, इसलिए तुम्हें गोवध का पाप लग गया है और श्री अंग की शुद्धि के लिए आप संसार के समस्त तीर्थों का स्नान करो अन्यथा हम सभी आपके साथ कोई लीला नहीं करेंगे तब भगवान श्रीकृष्ण ने कहा-

वृन्दावनम् परित्यजम पादमेव न गच्छामि।

हे राधा! मैं इस भूमि पर लीलाएं करने आया हूं और वृन्दावन को छोड़कर में एक कदम भी कहीं नहीं जाऊंगा सारे तीर्थों के स्नान करते-करते तो मेरी उम्र ही बीत जायेगी।

तब बृजराज श्रीकृष्ण ने अपनी बांसुरी से एक कुण्ड खोदा जिसे बज्रनाम कुण्ड कहते हैं तथा ब्रजेश्वरी राधारानी ने अपनी कंगन से एक कुण्ड उत्पन्न किया जिसे कंकड़ा कुण्ड कहा जाने लगा। इन कुण्डों में कभी जल समाप्त नहीं होता कालान्तर में इन्हीं कुण्डों को श्री कृष्ण कुण्ड एवं श्री राधाकुण्ड नाम से जाना जाने लगा तथा कस्बे का नाम भी राधाकुण्ड प्रचलित हुआ। कुण्डों की उत्पत्ति के पश्चात श्रीकृष्ण ने सभी तीर्थों का आह्वान किया कि वे इस पाप से मुक्ति चाहते हैं, इसलिए वे सभी तीर्थों पर एक साथ स्नान करना चाहते हैं बताया जाता है कि भगवान कृष्ण के आह्वान पर सभी तीर्थ सशरीर अपना-अपना जल लेकर उपस्थित हुए इस तरह 64 हजार तीर्थों का जल इन श्री कुण्डों में प्रवाहित हुआ। उस दिन कार्तिक की अहोई अष्टमी था।

इसलिए लोग उस दिन अपनी मनोकामना पूर्ति के लिए रात्रि में 12 बजे यात्री राधाकुण्ड-कृष्णकुण्ड में पर्व लेने आते हैं।

भगवान कृष्ण ने भी इन कुण्डों में स्नान कर गोवध के दोष से मुक्त होकर कहा कि जो प्राणी सच्ची भावना से अहोई अष्टमी के पावन पर्व पर पूर्ण श्रद्धा और नियमानुसार मेरी पूजा अर्चना कर इन कुण्डों में रात्रि 12 बजे चन्द्र दर्शन के पश्चात स्नान करेगा। उस प्राणी को मन वांछित फल की अवश्य प्राप्ति होगी।

आज भी प्रतिवर्ष लाखों श्रद्धालु यहां अहोई अष्टमी के योग स्नान के लिए आते हैं और सर्व मनोकामना पूर्ण होने की कामना करते हैं।

निसंतान दम्पतियों के लिए यह पावन योग स्नान संतान का फलदायक माना गया है। प्रतिवर्ष हजारों लोग यहां संतान प्राप्ति की कामना के लिए यहां आते हैं।

और देखा यह भी गया है कि अगले वर्ष वही दम्पत्ति अपने बच्चों को दर्शन कराने के लिए यहां आते भी हैं। ऐसे दम्पत्तियों को चाहिये कि वह पेठा, फल, पूजा सामग्री लेकर राधाकुण्ड के निवासी व्यक्तियों से पूछकर पूजा विधि मालूम करनी चाहिये एवं जिन कपड़ों में स्नान किया जाता है, उन्हें वहीं छोड़ दिया जाता है तत्पश्चात राधाकुण्ड से प्रार्थना करते हुए स्नान प्राप्ति की कामना करनी चाहिये इस पवित्र तीर्थ के बारे में बताया जाता है कि एक बार सम्राट अकबर ने भी यहां जीव हत्या न करने हेतु बादशाही फरमान जारी किया था, जो आज भी कुसुम सरोवर के पास एक पत्थर पर अंकित है इस लक्खी मेले के लिए प्रशासन एवं नगर पंचायत द्वारा अपनी खानापूर्ति हेतु बैठक तो आयोजित कर ली है, लेकिन व्यवस्था अभी तक नहीं हो पायी है।

प्रस्तुति: [illegible]श खण्डेलवाल